

पुण्यतिथि पर याद किए गए किसान नेता व पूर्व सांसद

कैनविज टाइम्स संचादन



बिसवां सीतापुर। राष्ट्रीय लोकदल की अगुवाई में पूर्व सांसद व किसान नेता रहे स्व. हरगोविंद वर्मा की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूर्व सांसद स्व. हरगोविंद वर्मा की पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय लोकदल के क्षेत्रीय अध्यक्ष भोलानाथ वर्मा की अगुवाई में गालोद कार्यकर्ताओं ने बिसवां केन्यूनिन चरित्रपरिसर में स्थित प्रतिमा पर मान्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। राष्ट्रीय लोकदल के क्षेत्रीय अध्यक्ष भोलानाथ वर्मा ने कहा कि स्वर्णीय हरगोविंद वर्मा किसानों के सच्चे मसीहा एवं हितैषी थे। उन्होंने सड़क से लेकर संसद तक किसानों की आवाज को बुलंद किया। किसानों की हर समस्या को लेकर संसद में संघर्ष किया। वे किसानों की हमेशा मुखर रहते थे। उन्होंने कहा कि स्व. हरगोविंद वर्मा जैसे

संघर्षील किसान नेता के पदविच्छिन्न पर चलकर ही किसानों की सच्ची सेवा की जा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि आज नेता तो बहुत है लेकिन उनके जैसा कोई दूसरा किसान नेता दूर दूर तक दिखाई नहीं पड़ता है। उन्होंने किसानों की अनेक समस्याओं का नियन्त्रण करणा। इस दौरान क्षेत्रीय महासचिव रामदास यादव, प्रदेश महासचिव महिला प्रकोष्ठ शांति विश्वकर्मा, प्रदेश महासचिव महिला प्रकोष्ठ लक्ष्मी मिश्र, गेंदबाल वर्मा, प्रभुदयाल भार्गव, नन्या सिंह, जाकिं अली, शकील, राजेंद्र वर्मा, सतीश वर्मा, फूल सिंह यादव, साविर अली, धनीराम यादव, नरेशचंद्र विश्वकर्मा, सियाराम वर्मा सहित बड़ी संख्या में राष्ट्रीय लोक दल के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नर्मदेश्वर शिव मंदिर पहुंचकर कैबिनेट मंत्री सुरेश खना ने बाबा भोले नाथ के कर सफाई कार्यक्रम में लिया भाग

कैनविज टाइम्स संचादन



सीतापुर। उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त एवं संसदीय कार्यालय मंत्री सुरेश खना द्वारा रविवार को सीतापुर के आरामपी इंटर कॉलेज प्रांगण में स्थित नर्मदेश्वर शिव मंदिर पहुंचे जहां उन्होंने जिला अध्यक्ष राजेंद्र शुक्ला व पार्टी नेताओं के साथ सबसे पहले नर्मदेश्वर भगवान भोलानाथ के दर्शन कर पूजा अर्चना की तथा साथ में मंदिर प्रांगण में आयोजित सफाई अभियान में भी भाग लिया। इस अवसर पर मंत्री सुरेश खना द्वारा जिला अध्यक्ष के साथ सबसे पहले नर्मदेश्वर भगवान भोलानाथ के दर्शन कर पूजा अर्चना की तथा साथ में मंदिर प्रांगण में आयोजित सफाई अभियान में भी भाग लिया। इस अवसर पर मंत्री सुरेश खना द्वारा जिला अध्यक्ष के साथ सफाई के बारे में अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के विषय में बताया कि यह प्रत्येक राम भक्त के लिए गर्व का विषय व समय है और करोड़ों आयोध्याओं का सम्मान का दिन है। इस मौके पर उन्होंने बताया कि गंगा जलापुर वर्षीय जलापुर को अयोध्या में रामलला की तरफ से मंत्री सुरेश खना का तरीका है और राम के आदर्शों पर चलने वाली पार्टी है। जिला अध्यक्ष राजेंद्र शुक्ला द्वारा समृद्धि देकर अपनी व जिला इकाई की तरफ से मंत्री सुरेश खना का स्वागत व अभिनंदन किया इस मौके पर पार्टी पदविधिकारी व नर्मदेश्वर मंदिर की व्यवस्था टीम परिषित की तरफ से मंत्री सुरेश खना का स्वागत व अभिनंदन किया इस मौके पर पार्टी पदविधिकारी व नर्मदेश्वर मंदिर की तैयारी में जुट गई है। अभियान के पहले दिन नगर अध्यक्ष बेबी अभिषेक गुप्ता ने उपरित रहे।

खना का स्वागत व अभिनंदन किया इस मौके पर पार्टी पदविधिकारी व नर्मदेश्वर मंदिर की तैयारी में जुट गई है। अभियान के पहले दिन नगर अध्यक्ष बेबी अभिषेक गुप्ता ने उपरित रहे।

जंगबहादुरगंज खीरी में कोहरा बना काल

कैनविज टाइम्स संचादन



जंगबहादुरगंज-खीरी। नेशनल हाइवे पर पहुंचकर हादसे में बाइक सवार की मौत हो गई जबकि कई वाहनों के बाइक

गने से भरी ट्राली की चपेट में आए बाइक सवार, युवक की मौत हो गई।

विभिन्न सड़क हादसों में एक की मौत, दो घायल, कोहराम

आपस में टकरा गए। कस्बा जंगबहादुरगंज निवासी 32 वर्षीय अंकित सिंह पुत्र विश्वनाथ रिंग जंगबहादुरगंज में मोबाइल की दुकान चलाता है। शनिवार की शाम को वह शहजाहानपुर से दुकान का सामान लेकर घर चल रहा था उसका साथ एवं बाइक पर बैठा था इसी दौरान उचितिया थाया क्षेत्र के गांग जलापुर के समीप पीछे से गने भरी ट्राली में बाइक की टक्कर हो गई।

रविवार की शाम को शव का अंतिम संस्कार

रिंग बाइक से उड़ाकर दूर जा गिरा जिससे उसे हल्की चोट आई। सड़क हादसे की सूचना मिलने के बाद थाना पुलिस व परिजन भी घटनास्थल पर पहुंच गए थे। जोरावर टक्कर होने के कारण अंकित के पेट विसर खुरी तरह से चोटिल हो गया तथा अंकित की एक आंख भी बाहर आ गई। रविवार की शाम को शव का अंतिम संस्कार

किया गया। मृतक की पांची व दो छोटे बच्चे हैं जिनका रो रोकर बुगा हाल हो गया है। बच्चों के स्थिर से चिता का साथ उठ जाने से लोग सदमे में आ रही एक अन्य पिक्की भी घटनास्थल पर पहुंच गए थे। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों के बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर दूसरे एवं तीसरे बच्चों को बचाने में एक वाहन लोडिंग ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। हालंकि इनमें किसी बचाने के चक्रवर्त में चालक ने अचानक ब्रेक लगा दी। घना कोहरा होने से चालक में पीछे से टक न टककर मार दी। तथा पीछे से तेज फ्रेशर मार दी। इसके अलावा उचितिया के परिचयी माहिर

थाईलैंड में भी मनोगा रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव : डॉ. परविंदर सिंह

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। थाईलैंड के राजदूत डॉ. परविंदर सिंह सुल्तानपुर के भौंयां स्थित थाई इंडो मंटिर पहुंचे। उन्होंने बताया कि हमारा सौभाग्य है कि 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मैं राज्युजारी प्रामोशिंग और शारीर मूरुगप्रलाद नरेंग सम्मिलित होंगे। उन्होंने ये भी बताया कि थाईलैंड में भी रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया जाएगा।

थाईलैंड से आए राजदूत (विश्व शांति संस्थान संयुक्त राष्ट्र) डॉ परविंदर सिंह, ने शारीर राजनीतिक थाई पुजारी क्रापालाड नारोंग के साथ अयोध्या के राज परिवार के साथ मिलकर अयोध्या में सांस्कृतिक व थाई कलाकृत खोलने को लेकर थाईलैंड की ओर से प्रस्ताव पत्र दिए हैं। यह केंद्र वैधिक पर्यटकों के लिए अवसर प्रदान करेगा। इसके अलावा उपर में भी बाट फार



राम अयोध्या संस्ति मंत्रालय, एक कला व सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना करने को लेकर यहां प्रस्ताव दिया गया है। अपने भारत दौरे पर आए थाईलैंड के राजदूत (विश्व शांति संस्थान संयुक्त राष्ट्र) डॉ परविंदर सिंह, ने राजनीतिक शारीर थाई पुजारी क्रापालाड नारोंग ने अयोध्या के राज परिवार के साथ अयोध्या के राज परिवार के साथ मिलकर अयोध्या में सांस्कृतिक व थाई कलाकृत खोलने को लेकर थाईलैंड की ओर से प्रस्ताव पत्र दिए हैं। यह केंद्र वैधिक पर्यटकों के लिए अवसर प्रदान करेगा। इसके अलावा उपर में भी बाट फार

समान करते हुए थाईलैंड का राष्ट्रीय प्रतीक गढ़ है। थाईलैंड में राजा को राम कहा जाता है। राज परिवार अयोध्या नामक शहर में रहत है। ये स्थान बैंकाक से कोई 50.60 किलोमीटर दूर है। यहां पर बौद्ध मंदिरों की भी भरमार है जिनमें भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां स्थापित हैं। व्याये ये कम हैरानी की बात है कि बौद्ध होने के बावजूद थाईलैंड के लोग अपने राजा को राम का वंशज होने के चलते विष्णु का अवतार मानते हैं। इसलिए थाईलैंड में एक तरह से राम राज्य है। वहां के राजा को भगवान राम का वंशज माना जाता है। थाईलैंड में 94 प्रतिशत आबादी बौद्ध मानवों है। फिर भी देश का राष्ट्रीय चिह्न गढ़ है। हिंदू पौराणिक कथाओं में गङ्गा की सवारी माना गया है। वहां का राष्ट्रीय ग्रंथ रामायण है। वैसे थाईलैंड में थेरावाद बौद्ध के मानने वाले बहुमत में हैं, फिर भी वहां का राष्ट्रीय ग्रंथ रामायण है।

परिवारिक व श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के सदस्य राजा विमलेन्द्र मोहन प्रतिष्ठा मिठ्या से मिलकर इस आशय का प्रस्ताव सौंपा है। हिंदू मूर्ति का थाईलैंड के राज परिवार पर सदियों से गहरा प्रभाव रहा है। माना यह जाता है कि थाईलैंड के राजा भगवान विष्णु के अवतार हैं। इसी भावना का

स्वच्छता अभियान के साथ चरण पादुका यात्रा के स्वागत को हम तैयार : डीएम



कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। रामपथ गमन मार्ग पर चरण पादुका यात्रा को सफल बनाने के लिए सुल्तानपुर के सभी विवायक और प्रशासनिक अधिकारी एक मंच पर आए हैं। सीताकुंड घाट से स्वच्छता अभियान का शुरूआत करते हुए घर-घर को स्वच्छ बनाने का संदेश जारी किया गया है। जिलाकारी ने आवाहन किया है कि चरण पादुका कार्यक्रम सकुशल संपन्न हो, इसके लिए सभी को सकारात्मक रूप से एक मंच पर आए हैं।

भगवान् श्री राम के राम पथ गमन के

इस अवसर पर स्थानीय लोगों की भी भूमिका देखने को मिला। डीएम-तिका ज्योत्स्ना ने बताया कि 22 जनवरी को अयोध्या में एक बव्य कार्यक्रम होना है। इसी को लेकर पुरे जिले में एक विशेष सफाई अभियान आज से सुरक्षित गया है। हमने सारे अफिसर्स को निर्देश दिए हैं कि वे अपने अफिस की भी साफ सफाई का विशेष यान रखें। डीएम ने बताया कि सभी ग्राम और जनपाल आपने अपील की गई कि साफ-सफाई का अपने क्षेत्र में विशेष अभियान चलाए। उन्होंने बताया कि हम इसे 26 जनवरी तक चलाएं।

इस अवसर पर स्थानीय लोगों की भी भूमिका देखने को मिला। डीएम-तिका ज्योत्स्ना और एसपी सोमेन वर्मा मुख्य विकास अधिकारी अंकुर कौशिक के साथ पहुंचे। जहां पर गोमती मित्र मंडल समेत अन्य संगठनों के सहयोग से स्वच्छता अभियान का शुरूआत किया गया।

भगवान् श्री राम के राम पथ गमन के

राम मंदिर प्राणप्रतिष्ठा को लेकर जिले में खासा उत्साह, राममय होगा पूरा जिला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। अयोध्या में श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर जिले भर में खासा उत्साह है। शासन के तत्वावधान में जिले में रविवार के पैरिशक्ति एवं प्रधुम्य मंदिरों में विशेष कार्यक्रमों रामायण, सुंदरकांड पाठ, भजन मंत्र संचार, रामनाम संकीर्तन आदि कार्यक्रमों की शुरूआत हुई, जो पूरी भवता और दिव्यता के साथ 22 जनवरी तक चलेगा। जिले भर में देव मंदिरों को स्वच्छ बनाकर उन्हें सुंदरता से सजाया जा रहा है। हनुमान मंदिर पर अखंड रामायण पाठ की शुरूआत, एडीएम ने पूजन-अचंन किया गया।

खीरी में 'रामायण' के फैस के लिए एक बड़ी खबर सामने आ रही है। लखीमपुर-शहर के श्री जानकी जीवन (मुडिया-महन) मन्दिर-प्रिंसिपिया में रविवार से श्री राजगोपाल मन्दिर ट्रस्ट श्री अयोध्या जी, लखीमपुर-खीरी अधिकृत प्राधिकरी (सर्वीकर) एसडीएस (सर्व) श्रीराम की अगुवाई में प्रोजेक्टर के जरिए रामानन्द सागर की 40 साल पुराने और लोकप्रिय टीवी सीरीज 'रामायण' का प्रसारण शुरू हुई, जो प्रतिविनय तथा समय शाम 05 बजे से रवि 09 बजे तक 22 जनवरी तक प्रसारित होगा। इस सीरीज का प्रसारण होना श्रीराम के अद्वालुओं के लिए एक खास तोहफा है।

बातों चलें तब रामायण भारतीय टेलीविजन के लिए एक खास तोहफा है। एक तरह से यहां मजदूरों की मंडी लगती है और भाव तय होने के बाद मजदूर काम पर चले जाते थे। किसी रोज लेकर बुरुज़ मजदूर तक यहां पर आएं। जिसे प्रशासन ने इन्हें कल दिखाया दिया है।

उन्होंने रामायण संकीर्तन की शुरूआत की रैकांत दुबे, राम चन्द्र तिवारी, सोनू, तिवारी, श्याम शंकर, दुबे, उमापति पांडेय, मिन्टू तिवारी, राकेश भारती, दारा तिवारी आदि जाग

लखनऊ। अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले श्री राम लता के भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का अमंत्रण समाजबादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव को मिला है। आमंत्रण मिलने पर उन्होंने खुशी जाहिर की है। इसके लिए उन्होंने ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय का आभार प्रकट किया है।

अखिलेश ने ट्रस्ट के महासचिव को पत्र लिखकर कहा है कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह

पूर्व प्रधान ने बांटे सैकड़े जरूरतमंदों को कंबल

सुल्तानपुर। कुड़वार ल्याक के प्रतापपुर ग्राम सभा के पूर्व प्रधान संजय कुमार दुबे ने गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आज सैकड़े जरूरतमंदों को कंबल वितरित किया गया। कंबल पाकर लोगों को बेहोर खुशी से खिल उठे। कार्यक्रम के दौरान पूर्व प्रधान संजय कुमार दुबे का गहरा राजीव तुवे, राम चन्द्र तिवारी, सोनू, तिवारी, श्याम शंकर दुबे, उमापति पांडेय, मिन्टू तिवारी, राकेश भारती, दारा तिवारी आदि जाग

लखनऊ तिवारी, राजीव दुबे, राम चन्द्र तिवारी, सोनू, तिवारी, श्याम शंकर दुबे, उमापति पांडेय, मिन्टू तिवारी, राकेश भारती, दारा तिवारी आदि जाग

कड़के की ठंड में बुझे अलाव-ठंड में ठिरुर रहे राहगीर व यात्री, डीएम के निर्देश हुए फेल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। रविवार सुबह पारा 7 डिग्री पर खुंच गया है। आसमान ने कोहरे की चाढ़ी ओढ़ रखी है। लेकिन इस कड़के की ठंड में नगर पालिका का अलाव बुझ गया है। बस स्टप और रेलवे स्टेशन पर अलाव नह जलने से राहगीर व यात्री ठंड में ठिरुर रहे हैं।

शहर के कई क्षेत्रों में नगर पालिका के अलाव की पोल खुल गई है। आलम ये है कि लोग चाय की भूमि पर हाथ सेंकर कर ठंड दूर करते दिखाई दिए। ये लापतवाही तब है जब जनप्रतिनिधि से लेकर प्रशासनिक अमला आज स्वच्छता अभियान की शुरूआत करने के लिए सड़कों पर था। लेकिन किसी को ये बदलाली नजर नह आई। सभी प्राण प्रतिष्ठा के लिए एक लोग चाय से यहां यहूद स्थानाला में खिजवाने का निर्देश दिया। नगर पालिका के इओं को आवारा पशुओं को

गौशाला में खिजवाने का निर्देश दिया। लेकिन ना तो शहर में सही से अलाव ही जल रहे और ना ही आवारा पशु गौशाला में पहुंचे हैं। बल्कि ठंड में ये पशु सड़कों पर ही दिखाई दे रहे हैं।

अपने अमले के साथ 31 दिसंबर की रात को निकली। अस्पताल, शहरीजां चौराहा, चौक आदि स्थानों पर उन्होंने अलाव की बेहतर व्यवस्था देने के निर्देश दिए। नगर पालिका के इओं को आवारा पशुओं को

स्वच्छता का जग्बा

एक बार फिर स्वच्छता के देशव्यापी सर्वे में इंदौर ने सातवीं दफा अपना ताज बरकरार रखा, हालांकि इस बार कभी प्लेग से जूँझने वाला सूरत भी साथ खड़ा नजर आया। निश्चित रूप से सफलता के शिखर पर पहुँच जाना महत्वपूर्ण होता है, लेकिन शिखर पर सत साल तक टिके रखना बड़ी बात होती है। जाहिर है यह सफलता सिर्फ प्रशासन व स्थानीय निकाय की ही कोशिशों से संभव नहीं थी, जब तक कि इसमें जनभागीदारी सुनिश्चित न होती। इंदौर ने घर-घर से कचरा उठाने, अगलनीय कचरे को अलग करने व कचरे का पुनर्वर्कण करने जैसे कई चरणों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। कभी सिटी ब्यूटीफुल के उपनाम से पहचान बनाने वाले चंडीगढ़ का स्वच्छता सर्वे में सर्वश्रेष्ठ सफाई मित्र बना संतोष की बात है। लेकिन हरियाणा, पंजाब व खुद केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ की राजधानी होने तथा देश के पहले नियोजित शहर होने के नाते इस शहर को स्वच्छता के शीर्ष मानकों में खरा उतरना चाहिए था। वहीं इंदौर के साथ पहला स्थान साझा करने वाले सूरत की उपलब्धि भी सराहनीय है। कभी प्लेग की महामारी के कारण दुनियारूप में सुर्खियों में आने वाले सूरत का स्वच्छता के मानकों पर खरा उतरना निश्चित ही चौकाने वाला है। महामारी के बाद इस शहर में सफाई के प्रयास युद्धस्तर पर किये। पिछले तीन दशक में लगातार स्वच्छता के प्रयासों का नतीजा है कि सूरत का कायाकल्प हुआ है। राज्य के रूप में महाराष्ट्र ने बाजी मारी है। वहीं गंगा किनारे बसे शहरों में वाराणसी अब्ल रहा है। मगर उत्तर प्रदेश व बिहार के किसी भी शहर का देश के दस स्वच्छ शहरों की सूची में स्थान न बना पाना नीति-नियताओं को आत्ममथन का मौका देता है। बिहार को भी सोचना चाहिए कि क्यों उसकी राजधानी पटना का स्थान ढाई सौ शहरों से ऊपर है। इन राज्यों को स्वच्छता को लेकर युद्ध स्तर पर काम करने की जरूरत है। स्वच्छ शहर शोभनीयता के अलावा जनस्वास्थ्य की दृष्टि से भी विशेष महत्वपूर्ण है। बहरहाल, केंद्रीय शहरी विकास और शहरी मामलों के मंत्रालय ने पिछले लगभग एक दशक से स्वच्छता रैंकिंग जारी करके देश में सफाई के प्रति एक स्वस्थ प्रतियोगिता शुरू की है। सभी राज्यों को सफाई के लिये प्रेरणा मिली है। जन-जन में भी जागरूकता आई। लेकिन स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिये अभी अधिक प्रयासों की जरूरत है। हमें याद रहे कि लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छ भारत मिशन की घोषणा किये दस साल हो गए हैं। अपेक्षित लक्ष्य पाने के लिये अतिरेक प्रयास करने की जरूरत है। यह भी समझने की जरूरत है कि गंदगी से ही तमाम बीमारियों को पैदा करने वाले जीवाणु-विषाणु पुनर्पते हैं। हम स्वच्छता को प्राथमिकता देकर बीमारियों पर होने वाले खर्च को भी बचा सकते हैं। हम विचार करें कि इंदौर जैसी प्रशासनिक व जनता की भागीदारी अन्य शहरों व राज्यों में क्यों नहीं होती। यह भी कि हम घर में तो साफ-सफाई रखते हैं, लेकिन सार्वजनिक स्थलों पर सफाई को लेकर गंभीर क्यों नहीं होते। क्यों हम घर से निकलने वाले कचरे का वर्गीकरण सूखे, गीले और अगलनीय कचरे के रूप में नहीं करते। निश्चित रूप से दिल्ली में आबादी के भारी दबाव का स्वच्छता पर असर पड़ता है। लेकिन फिर भी राष्ट्रीय राजधानी में दिखने वाले कचरे के वास्तविक पहाड़ देश को शर्मसार करते हैं। जिस पर राजनीति तो होती है, लेकिन सारे दल मिलकर इसे हटाने का प्रयास नहीं करते। दरअसल, सफाई हमारी आदत में शामिल होनी चाहिए और प्रशासन को सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने का सलीका आना चाहिए। स्थानीय निकायों को घर-घर से वर्गीकृत कूड़ा उठाने, सीवरों की सफाई और उनका पानी जीवनदायिनी नदियों में जाने से रोकने के लिये अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। कचरे के निस्तारण के लिये हरित तकनीक प्रयोग हो। सफाई मित्रों की सुश्क्षा व सम्मान सुनिश्चित किया जाए। जिससे पूरे देश में स्वच्छता के प्रति जागरूकता को विस्तार मिले। हमें ध्यान रखना चाहिए कि पर्यावरण प्रदूषण से देश में लाखों लोगों की जान चली जाती है। सफाई की दिशा में कदम उठाकर हम पर्यावरण को शुद्ध बनाने का महती दायित्व निभा सकते हैं।

सारे तीरथ बार-बार, गंगासागर एक बार

(मकर संक्रान्ति पर विशेष)

गांगासागर में मकर संक्रांति पर प्रतिवर्ष विशाल मेला आयोजित है। इस दौरान दुनिया भर से लाखों ब्रह्मद्वालु यहां स्नान के लिए पहुंचते हैं। मकर संक्रांति पर सूर्य देव के धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करते ही तीर्थयात्री पवित्र संगम पर डुबकी लगाते हैं। गंगासागर में मकर संक्रांति के दिन स्नान करने का विशेष महत्व है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इस दिन गंगासागर में जो ब्रह्मद्वालु एक बार स्नान करता है उसे 10 अश्व यज्ञ और एक हजार गाय दान करने का फल मिलता है। गंगासागर तीर्थयात्रा सैकड़ों तीर्थयात्राओं के समान मानी जाती है। भारत में सबसे प्राचीन गंगा नदी गंगोत्री से निकल कर पश्चिम बंगाल में सागर से मिलती है। इस सभी नदियों को सागरद्वीप के नाम से भी जाना जाता है। कुंभ मेले को छोड़कर देश आयोजित होने वाले अन्य सभी मेलों में गंगासागर का मेला सबसे बड़ा मिलता है। हिन्दू धर्मग्रन्थों में इसकी चर्चा मोक्षधाम के तौर पर की गई है। मकर संक्रांति पर लाखों ब्रह्मद्वालु मोक्ष की कामना लेकर आते हैं और सागर-समुद्र में डुबकी लगाते हैं। मान्यता के अनुसार साल की 12 संक्रांतियों में मकर संक्रांति का सबसे ज्यादा महत्व है। इस दिन सूर्य मकर राशि में आता है। इसके साथ देवताओं का दिन शुरू हो जाता है। गंगासागर के संगम पर ब्रह्म समुद्र को नारियल और यज्ञोवती भेंट करते हैं। समुद्र में पूजन एवं पिण्ड कर पितरों को जल अर्पित करते हैं। गंगासागर में स्नान-दान का महत्व शाम में विश्वार से बताया गया है। मान्यतानुसार जो युवतियां यहां पर स्नान करती हैं, उन्हें अपनी इच्छानुसार वर तथा युवकों को स्वेच्छित वधु प्राप्त होती मेले में आए लोग कपिल मुनि के आश्रम में उनकी मूर्ति की पूजा करते हैं। मंदिर में गंगा देवी, कपिल मुनि तथा भगीरथ की मूर्तियां स्थापित हैं। गंगासागर में मकर संक्रांति से 15 दिन पहले ही मेला शुरू हो जाता है। मेले दुनियाभर से पहुंचे तीर्थयात्री, और साधु-संत संगम में स्नान कर सूर्योदेव अरच्य देते हैं। इसे मनी कुंभ मेला भी कहते हैं। मकर संक्रांति के पर दूसरे दिन सूर्य पूजा के साथ विशेष तौर कपिल मुनि की पूजा की जाती है। मान्यता के अनुसार यज्ञोवती के लिए गृहस्थ आश्रम या पारिवारिक जीवन वर्जित होता है। भगवान विष्णु के कहने पर कपिल मुनि के पिता कर्दम ऋषि ने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया। उन्होंने विष्णु भगवान से शर्त रखी कि भगवान विष्णु उनके पुत्र रूप में जन्म लेना होगा। भगवान विष्णु ने शर्त मान ली फलस्वरूप कपिल मुनि का जन्म हुआ। उन्हें विष्णु का अवतार माना गया। आगे चल गंगा और सागर के मिलन स्थल पर कपिल मुनि आश्रम बना कर तप व्रत लगे। इस दौरान राजा सागर ने अश्वमेध यज्ञ आयोजित किया। इसके बाद विष्णु के अश्वों को छोड़ा गया। परिषटी है कि ये जहां से गुजरते हैं वे राजा के अधीनत स्वीकार करते हैं। अश्वों को रोकने वाले राजा को युद्ध करना पड़ा है। राजा सागर ने यज्ञ अश्वों के रक्षा के लिए उनके साथ अपने 60 हजार वृक्षों को दिया।

मान्यता के अनुसार साल का 12 संक्रान्तिया में मकर संक्रान्ति का सबसे ज्यादा महत्व है। इस दिन सूर्य मकर राशि में आता है और इसके साथ देवताओं का दिन शुरू हो जाता है। गंगासागर के संगम पर श्रद्धालु समुद्र को नारियल और यज्ञोपवीत भेट करते हैं। समुद्र में पूजन एवं पिण्डदान कर पितरों को जल अर्पित करते हैं। गंगासागर में स्नान-दान का महत्व शास्त्रों में विस्तार से बताया गया है। मान्यतानुसार जो युवतियां यहां पर स्नान करती हैं, उन्हें अपनी इच्छानुसार वर तथा युवकों को स्वेच्छित वधु प्राप्त होती है। मेले में आए लोग कपिल मुनि के आश्रम में उनकी मूर्ति की पूजा करते हैं। मंदिर में गंगा देवी, कपिल मुनि तथा भगीरथ की मूर्तियां स्थापित हैं। गंगासागर में मकर संक्रान्ति से 15 दिन पहले ही मेला शुरू हो जाता है। मेले में दुनियाभर से पहुंचे तीर्थयात्री, और साधु-संत संगम में स्नान कर सूर्यदेव को अर्घ्य देते हैं। इसे मिनी कुंभ मेला भी कहते हैं। मकर संक्रान्ति के पर यहां सूर्य पूजा के साथ विशेष तौर कपिल मुनि की पूजा की जाती है। मान्यता है कि ऋषि-मुनियों के लिए गृहस्थ आश्रम या पारिवारिक जीवन वर्जित होता है। भगवान विष्णु के कहने पर कपिल मुनि के पिता कर्दम ऋषि ने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया उन्होंने विष्णु भगवान से शर्त रखी कि भगवान विष्णु को उनके पुत्र रूप में जन्म लेना होगा। भगवान विष्णु ने शर्त मान ली फलस्वरूप कपिल मुनि का जन्म हुआ। उन्हें विष्णु का अवतार माना गया। आगे चल कर गंगा और सागर के मिलन स्थल पर कपिल मुनि आश्रम बना कर तप करने लगे। इस दौरान राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ आयोजित किया। इसके बाद यज्ञ के अश्वों को छोड़ा गया। परिपाटी है कि ये जहां से गुजरते हैं वे राज्य अधीनता स्वीकार करते हैं। अश्व को रोकने वाले राजा को युद्ध करना पड़ता है। राजा सगर ने यज्ञ अश्वों के रक्षा के लिए उनके साथ अपने 60 हजार पुत्रों को भेजा। अचानक यज्ञ अश्व गयायब हो गया। खोजने पर यज्ञ का अश्व कपिल मुनि के आश्रम में मिला। फलतः सगर पुत्र साधनरत ऋषि से नाराज हो उन्हें अपशब्द कहने लगे। ऋषि ने नाराज हो कर उन्हें शापित करते हुए अपने नेत्रों के तेज से भस्म कर दिया।

छोटी सी धारा सागर से मिलती है।
स्थान महर्वत तीन दिनों का होता है।



था। मान्यता है कि यहां मकर संक्रान्ति पर पुण्य-स्नान करने से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। सुंदर बन निकट होने के कारण गंगासागर मेले को कई विषम स्थितियों का सामना करना पड़ता है। तूफान और ऊंची लहरें हर वर्ष मेले में बाधा डालती हैं। इस द्वीप में ही रॉयल बंगाल टाइगर का प्राकृतिक आवास है। यहां दलदल, जलमार्ग, छोटी नदियां और नहरें भी हैं।

नहीं है। मेले के लिए एक स्थान निश्चित है। कहा जाता है कि यहां स्थित कपिल मुनि का प्राचीन मंदिर सागर की लहरें बहा ले गई थी। मंदिर की मूर्ति अब कोलकाता में है और मेले से कुछ सप्ताह पूर्व यहां के पुरोहितों को पूजा-अच्छाना के लिए भिलती है। गंगासागर में कपिल मुनि का प्राचीन मंदिर समुद्र में समा चुका है। 1973 में यहां उनका नया मंदिर बना। इसी के श्रद्धालु दर्शन करते हैं। गंगासागर गंगा नदी का छोटा डेल्टा द्वीप है। यहां की आवादी करीब दो लाख है और इसका क्षेत्रफल 282 वर्ग किलोमीटर है। सागर द्वीप के एक ओर बंगाल की खाड़ी और दूसरी ओर बांग्लादेश है। इस सुंदर द्वीप के ज्यादातर क्षेत्र में घने जंगल हैं। कपिल मुनि के मंदिर, आश्रम के अलावा यहां महादेव मंदिर, शिव शक्ति-महनिर्वाण आश्रम, भारत सेवाश्रम संघ का मंदिर, धर्मशालायें भी हैं। अब पूरे वर्ष यहां लोगों का आवागमन लगा रहता है। कोलकाता से यहां तक के लिए सड़क बनी हुई है। मात्र पांच किलोमीटर नाव का सफर करना पड़ता है। गंगासागर में 14 और 15 जनवरी को मुख्य मेला लगता है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी गंगासागर के लिए मुरिंगा में ब्रिज का निर्माण करवाने को प्रयासरत है। इस ब्रिज के बनने से श्रद्धालु सड़क मार्ग से कुचेरिया तक आ सकेंगे। लोगों को यहां जल मार्ग से नहीं आना पड़ेगा। लोगों की मांग है कि गंगासागर मेले को भी कुंभ में जैसा दर्जा मिलना चाहिए। यहां के विकास के लिए कुंभ मेले की तरह अलग से बजट उपलब्ध हो। -रमेश सर्वाफ धमोरा

ठीक क

तचीन काल से मेंहदी भारत में शादी, त्योहारों और अन्य समारोहों जैसे शुभ अवसरों पर व्यापक रूप से उत्तमोग की तीति है। मेंहदी को एक दिव्य आशीर्वाद माना जाता है, जिसका लिए शादी के अवसरों पर दलहाँ और दलहन दोनों मिल जाएगा। मुंह में छाले- मुंह में होने वाले बहुत तकलीफ देते हैं। इसके लिए मेंहदी के पत्त रात में साफ पानी में भिंगों दें। सुबह पत्तों को पानी कालकर इस पानी से कुल्ला करें। छाले जल और ठीक हो जायेंगे। चोट लगने पर- शरीर के किसी

को मेंहदी रचाई जाती है। मेंहदी के फायदे केवल हाथों में लगाने तक ही सीमित नहीं हैं। इसका उपयोग पारंपरिक दवाओं में भी किया जाता है। इस पौधे के विभिन्न भाग सिरदर्द से लेकर कुष्ठ रोग और त्वचा की अन्य समस्याओं के उपचार में लाभदायक होते हैं। मेंहदी को हिना भी कहते हैं। मेंहदी के पत्ते नहीं बल्कि इसका पाउडर भी काफी गुणकारी होता है। एक जड़ी-बूटी होने के नाते यह पेट संबंधित समस्या या छोटी-मोटी चोट लगाने पर होने वाले दर्द को चुटकियों में दूर कर सकती है। आइए जानते हैं कि मेंहदी की पत्तियों के पाउडर, पेस्ट के क्या स्वास्थ्य लाभ हैं। पैरों में छाले- आगर पैर में छाले हो जाए या चप्पल काट खाए तो नारियल के तेल में मेंहदी मिलाकर उस स्थान पर लगाएं। छालों में होने वाली की जलन से तुरंत आराम में चोट लग जाए और दर्द सहा न जाये तो मेंहदी के पत्तों को पीस कर उसमें थोड़ी सी हल्दी मिलाकर उस स्थान पर बांधे। इससे आपको जल्द ही दर्द में राहत मिलेगी। टीबी में मददगार- मेंहदी में टीबी जैसी धातक बीमारी को दूर भगाने के गुण होते हैं। एंटीबैकरियल होने के नाते यह टीबी से रोग से लड़ने में मददगार हो सकता है। इसकी पत्तियों को पीसकर इस्तेमाल करने से टीबी की बीमारी में राहत मिलती है लेकिन ऐसा करने से पहले डॉक्टर से सलाह अवश्य लें। पेट की बीमारी- मेंहदी में कई ऐसे गुण होते हैं जिनसे पेट में होने वाली बीमारी में आराम मिलता है। आर्युदेव में मेंहदी को कई तरीके से बनाकर पेट की बीमारियों की दवा में शामिल किया जाता है। इसे सेवन से किसी प्रकार का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता है।

बातचीत जोर-शोर से शुरू हो गई है। कंग्रेस आलाकमान ने अंततः प्रत्येक राज्य में राजनीतिक स्थिति की बारीकियों को ध्यान में रखते हुए भारत के साझेदारों के बीच समझौतों को शीघ्र पूरा रही है, जबकि अधिक शक्तिशाली सीपीआई (एमएल) लिवरेशन सीमित आधार है और वामपंथी जन संगठनों के सक्रिय समर्थन से कंग्रेस को अत्यधिक लाभ होगा। जहां तक आंध्र प्रदेश की बात है तो यह राज्य कभी कम्युनिस्टों का गढ़ था, लेकिन अब यहां

तरंग यह स्वीकार करना पड़ सकता है। अल्ला
स भाजपा या गैर-इंडिया गठबंधन वाली क्षेत्रों

हुए। शुरूआत करने के लिए, कंग्रेस और दा वामपंथी दल सोसायटी और सीपीआई (एम) केरल के साथ एक अलग स्तर पर व्यवहार करने पर सहमत हुए हैं, जहां सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाला वाम मोर्चा और कंग्रेस के नेतृत्व वाला यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट लड़ेंगे। 20 लोकसभा सीटों के लिए वहां दोनों आपस में ही चुनाव लड़ेंगी परन्तु जो भी जितनी भी सीटें जीतेगी वह इंडिया ब्लॉक की ही जीत होगी क्योंकि वहां भाजपा उनके लिए कोई खतरा नहीं है। फिर बात बंगाल की है जहां वाम मोर्चा बेहद कमज़ोर स्थिति में है और उसने राज्य में भाजपा और तृणमूल कंग्रेस दोनों से लड़ने का फैसला किया है। अगर कंग्रेस तृणमूल के साथ गठबंधन करने का फैसला लेती है, तो वामपंथी छोटे सहयोगी आईएसएफ के साथ लोकसभा चुनाव अकेले लड़ेंगे। इसके अलावा चार राज्य हैं, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, बिहार और झारखण्ड जहां इंडिया गुट एक साथ काम कर रहा है और कंग्रेस प्रमुख राजनीतिक पार्टी नहीं बल्कि साझेदारों में से एक है। इनमें से पहले से ही द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन के तहत तमिलनाडु में सीपीआई और सीपीआई (एम) के पास दो-दो सीटें हैं। उमीद है कि यह पैटर्न 2024 के चुनावों में भी जारी रहेगा। अन्य तीन राज्यों में, बिहार में, सीपीआई एक सीट के लिए बातचीत कर



ਮਨ ਕਾ ਤਾ ਕੇ ਕਰੋ ਸਕ

दन का शाब्दिक अर्थ है 'देने की क्रिया'। जब हम अपनी सामर्थ्यनुसार किसी जरूरतमंद की मदद करते हैं तो वह दान कहलाता है। दान में दातापन का भाव नहीं होना चाहिए। कहा भी जाता है कि एक हाथ से ये दान करो कि दूसरे हाथ को भी पता नहीं चलें। हिंदू धर्म में दान का

अल्पाधिक महत्व बताया गया है, यह सिर्फ हमारा रिवाज व परंपरा मात्र नहीं है बल्कि दान करने के पीछे हमारे हर धार्मिक ग्रंथों एवं शास्त्रों में महत्वपूर्ण उद्देश्य बताए गए हैं। कर्ण, दधीचि तथा राजा हरिशचंद्र जैसे परमदानी भारत में ही हुए हैं, जिन्होंने दुनिया के सामने दान की मिसाल कायम की। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के परम अनुयायी विनोबा भावे के शब्दों में दान का अर्थ फेंकना नहीं बल्कि बोना है। पुराणों में भी अनेक तरह के दानों का उल्लेख मिलता है जिनमें अनन्दान, विद्यादान, अभयदान तथा धनदान को श्रेष्ठ माना गया है। अब तो भारत में देहदान का भी प्रचलन हो चला है। प्रकृति सबसे अच्छी शिक्षक है जो हमें देना सिखाती है। सूर्य, फूल, पेड़, नदियां, धरती सब कुछ न कुछ देते हैं, फिर भी न सूर्य की रोशनी का मुहूर्द, न फूलों की खुशबू, न पेड़ों के फल और न ही नदियों का जल। इसलिए कहा जाता है कि दान एक हाथ से देने पर अनेक हाथों से लौटकर हमारे पास वापस आ जाता है। नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित मदर टेरेसा ने कभी फुटपाथ पर बैठी एक भूखी महिला को कुछ खाने को दिया, उस महिला ने मदर टेरेसा से निवेदन किया कि कृपया रुकें, मैं अभी आती हूँ। उन पर्सों में एक और पर्सों में एक

स हयाद्रि पर्वत सृंखला, सघन जंगल, फूलों की घाटी, किले, जलप्राप्त, घट, रंग-बिरंगे पंछी, तितलियां, मरुजीवी बैल दध की धार बहावी गायें, दूर-दूर तक सफेद कुर्ता-पायजामा और नेहरू टोपी लगाए दिखते हैं। घरों के अंगन रंगोली से सजे हुए होते हैं। कंवील और तुलसी-चौरा यहां घर-घर में आपको दिख जाएंगे। सतारा निरमिस्यों को मतारा

फैले गने के खेत, आकाश की हड तक पहुंचते ज्वार-बाजरे के सिट्टे, सदाबहार मौसम, संदली हवा में केसरी ध्वज को हाथ में थामे स्वच्छ - सुंदर सतारा। इस शहर को देखना जैसे सतारा फोटो एलबम में लगे पिक्चर पोस्ट कार्ड को देखना हो। फिलहाल साढ़े चार लाख की आबादी वाले इस शहर को 17वीं शताब्दी में शहू जी महाराज ने बसाया था। जो वीर छत्रपति शिवाजी के पौत्र, वीर संभा जी के पुत्र और मराठा साम्राज्य के संस्थापक भी थे। यह शहर 'शूरवीरों की धरती' भी कहलाता है। इसके इतिहास की गौखर गाथा सुनाती हैं सतारा में बने दुर्ग की दीवारें, जो आज भी खड़ी हैं सहयाद्रि पर्वत श्रृंखला की टेक लेकर। महाराष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति को सहयाद्रि पर्वत श्रृंखला ने अपनी धेरांबंदी में सहेज कर रखा हुआ है। स्थित्यों यहां नऊवीं साड़ियां और पैठीयों में जारी शैली जावें में जावें जी जेवी जावें पा

के स्वच्छ व हरा-भरा होने पर नाज है। महानगरों के मुकाबले प्रदूषण यहां न के बराबर है। गने के लहलहाते खेतों से सजी सतारा की धरती अपने सदाबहार हो रंग में रंगी रहती है वर्ष भर। कहीं मटकी, मक्का, ज्वार, बाजरा, आलू, मूंगाफली, चावल, गेहूं, चना, मूंग, हल्दी, अदरक, अनार की खेती होती है यहां। यहां की लाल- काली मिट्टी ऐसी है कि सब कुछ उगा लेती है। यहां हर जीव फल जाता है, बस आप हिमाचल के सेब की बात न कर बैठिएगा, वह नहीं उगाता है पठार।' फलटण से सतारा जाते हुए सर्पीली सड़कों के आर-पार बने खेतों में गन्ना और मक्का साथ-साथ उगे हुए ऐसे लगते हैं, जैसे किसान ने आते-जाते राहगीरों के लिए मक्के की रोटी पर गुड़ की ढेली धर कर रख दी हो। सतारा के बैल आप देखेंगे तो प्रेमचंद्र की कहानी 'दो बैलों की कथा' के हीरा-मोती तीकी जाति जारी रखते होंगे। संस्कृत देवों से सतारा

